eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

बाबा भीम राव अम्बेडकर और नव बौद्ध आंदोलन

[1]सुमन
[2]प्रो0 राजेश कुमार गौतम
[1]शोधार्थिनी इतिहांस विभाग, बुद्ध पी0जी0 कालेज कुशीनगर, उतर प्रदेश
[2]इतिहांस विभाग, बुद्ध पी0जी0 कालेज कुशीनगर, उतर प्रदेश

Received: 20 Jan 2024, Accepted: 28 Jan 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2024

Abstract

प्राचीन काल से भारत हिंदू धर्म प्रधान देश रहा है लेकिन समय के साथ हिंदू धर्म कर्मकांड, सामाजिक बुराईओ से ग्रस्त हो गया बलि एवं अस्पृश्यता जैसी समस्याओं ने मानवीय जीवन को नारकीय बना दिया था ऐसे समय मे महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म के द्वारा मनुष्य को कल्याण का मार्ग दिखाया आगे चलकर बाबा साहेब अंबेडकर ने भी दलित वंचित पीड़ित को बौद्ध धर्म का मार्ग दिखाया और बौद्ध धर्म मे समय काल मे आ गयी बुराईयों को दूर करके मूल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अपनाया और एक नया नाम दिया नव बौद्ध आंदोलन जिसे नव दलित आंदोलन भी कहा जाता है इस नये धार्मिक सुधार आंदोलन का मकसद दलितों को सामाजिक आर्थिक धार्मिक राजनीतिक रूप से सशक्त बनाना था जिसमे बाबा साहेब काफी हद तक कामयाब रहे, यदि नई दुनिया पुरानी दुनिया से भिन्न है तो नई दुनिया को पुरानी दुनिया से अधिक धर्म की जरूरत है ये बात बाबा साहब ने बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य लेख मे कहा था वे बहुत पहले से ही अपने सामाजिक जीवन मे झेले गये तिरस्कार से व्यथित थे और उन्हें इस बात का अहसास था कि अगर उनके जैसे पढ़े लिखे और विद्वान् व्यक्ति का इतना सामाजिक तिरस्कार हो सकता है तो निरक्षर और गरीब दलित लोगों के साथ कितनी खराब स्थिति होगी।

शब्द कुंजी– धम्म, वंचित ,शोषित, समता, प्रज्ञा, करुणा, पारिब्राजक, निर्वाण

Introduction

बाबा साहब इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि कोई समाज तभी उन्नति कर सकता है जब वो आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से सशक्त हो क्योकि बिना धर्म के नैतिक रूप से व्यक्ति का उत्थान नही हो सकता है, चूँकि हिंदू धर्म मे अस्पृश्यता की बुराई मौजूद थी जो मानव मानव मे भेद भाव करती थी, जैसा कि हम जानते है इसी हिंदू धर्म की बुराईयो के विरुद्ध और मानव कल्याण की लडाई जैन और बौद्ध धर्म ने भी लड़ा, बौद्ध धर्म ने मानव कल्याण का जो मार्ग दिखाया उसे वंचित शोषित दमित समाज ने बड़े उत्साह से अपनाया लेकिन समय काल के साथ बौद्ध धर्म भी अनेक बुराइयों का शिकार होकर कई संप्रदायों मे विभक्त हो गया जैसे हीनयान महायान थेरवाद व्रजयान आदि इसमें से कुछ ने हिंदू धर्म की ही अनेक बुराइयों को स्वीकार कर लिया यही कारण है। जब बाबा भीम राव अम्बेडकर ने हिंदू धर्म छोड़ने का निर्णय लिया तो बौद्ध धर्म मे उन्हें वो सारी विशिष्टताएँ दिखी जो मानव कल्याण के लिए जरूरी थी, इस संबंध मे बाबा साहब का

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

कहना था कि किसी भी समाज को धर्म की बहुत जरूरत होती है क्योकि धर्म के बिना समाज जागृत नही हो सकता है, समता, मैत्री, बन्धुभाव ये बातें भी संसार के उद्धार के लिए आवश्यक होती है और वे सिर्फ बुद्ध धर्म मे ही मिल सकती है आगे उन्होंने बताया कि मैंने बीस वर्षो तक विभिन्न धर्मों का अध्ययन किया है और सभी धर्मो के अध्ययन करने के बाद ये कहा जा सकता है कि संसार को बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लेना चाहिए, लेकिन उन्होंने परंपरागत बौद्ध धर्म को स्वीकार नही किया बल्कि तर्क और वैज्ञानिकता पर आधारित मूल बौद्ध धर्म को अपने समाज की प्रगति को ध्यान मे रखकर नवीन तत्व से सुसज्जित किया और उसे भीमयान या नवयान नाम दिया, देखा जाय तो नवयान कोई अलग धर्म नही था बल्कि ये मूल बौद्ध धर्म ही था 1956 में बी बी सी लंदन की वार्ता मे बाबा साहब ने कहा था कि मै बौद्ध धर्म को क्यो पसंद करता हु और वर्तमान मे उसकी प्रसंगिकता क्यो है इस संदर्भ मे आगे बताते हुए उन्होंने कहा बौद्ध धर्म ने समाज को तीन सिद्धांत प्रदान किया है जिन्हे अन्य कोई धर्म नही दे पाया है वो है प्रज्ञा करुणा और समता और ये वही तत्व है जिसे व्यक्ति सुखी और प्रसन्न जीवन के लिए चाहता है बौद्ध धर्म सताए और पद दलितों के लिए आशा का दीप है, अगर नवयान की विशिष्टताओ को देखा जाय तो जहाँ इसमें बौद्ध धर्म की सभी मूल तत्व बिद्यमान थे वही कुछ नवीन तत्व भी थे बाबा साहब नवयान अनुयायियों को बाइस हिंदू विरोधी शपथ ग्रहण करवाते थे जिसमे त्रिदेव की पूजा से इंकार, गौरी गणेश का पूजन न करना, श्राद्ध, पिंडदान जैसे धार्मिक कर्मकांड से परहेज जैसे कई बिंदु शामिल है देखा जाय तो बाबा साहब द्वारा आरंभ किया गया नव बौद्ध आंदोलन अनेक मामलों मे पहले के बौद्ध संप्रदाय से पृथक था अंबेडकर का बौद्ध धर्म तार्किकता, स्पष्टता, मानववाद और वैज्ञानिक प्रकृति पर आधारित था बाबा साहब के धर्म मे पारिव्राजक अवधारणा को लेकर संशय न था, इनका भी मानना था कि बौद्ध मोक्षदाता के बजाय मार्गदाता है, इनका मानना था कि महात्मा बुद्ध ने घर वालो को बताकर ही ज्ञान प्राप्ति के लिए गृहत्याग किया, मूल बौद्ध धर्म मे स्वार्थविहीनता की बात की गयी है जबकि नवयान मे सामूहिक पहचान पर विशेष ध्यान दिया गया गया है न कि एकल पहचान पर बाबा साहब ने नवयान द्वारा मूल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों मे सुधार किया जो कि तत्कालीन समाज की ही नही बल्कि राजनीतिक सुधारों की भी एक व्यापक मांग रही हैं।

नवयान सिद्धांत बहुत सारे मामलों मे बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों पर विश्वास करता था लेकिन कुछ ऐसे बिंदु थे जिन पर बाबा साहब का विरोध था जैसे चार आर्य सत्य जो की बौद्ध धर्म का मूल सिद्धांत था दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध मार्ग, बाबा साहब को इन आर्य सत्यों पर आपत्ति थी क्योकि उनका कहना था कि यदि जीवन को हम दुःखमय मान ले तो दुखों पर आधारित कोई सामाजिक व्यवस्था बनाई नही जा सकती है उनका मानना है कि यदि जीवन को दुःखमय मान ले तो व्यक्ति वर्तमान मे ही संतुष्ट हो जायेगा और उसे बदलने की कोशिश नही करेगा जिसे उचित नही माना नही जा सकता है इसलिए अगर किसी को अपने दुखों से मुक्ति चाहिए तो उसे अपने प्रयासों द्वारा अपने दुखों को समाप्त करने की कोशिश करना ही चाहिए इसलिए जीवन दुःखमय है जैसे बौद्ध सिद्धांतों मे विश्वास नही किया जा सकता है बल्कि हर किसी को अपने शक्ति द्वारा दुखों से मुक्त होने का प्रयास करना ही होगा।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

इसके अलावा बौद्ध धर्म का पुनर्जन्म सिद्धांत व्यक्ति की मुक्ति पर बल देता था जबकि नवयान सम्प्रदाय पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार नही किया नवयान सामूहिक मुक्ति पर बल देता है क्योंकि उसका मानना है कि मानव को इस जीवन को बेहतर बनाना चाहिए न कि मृत्यु के बाद बेहतर की उम्मीद करनी चाहिए, जहाँ तक निर्वाण की अवधारणा का सवाल है तो बौद्ध धर्म मे और नवयान दोनों मे निर्वाण प्राप्ति को महत्व प्राप्त है लेकिन कुछ अंतर भी है जैसे नवयान मे निर्वाण का लक्ष्य लौकिक जीवन के अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करना था न कि कोरी कल्पना के द्वारा, नवयान मे निर्वाण केवल स्वयं मुक्ति का साधन नही था बल्कि इसका लक्ष्य सम्मान और समतामूलक समाज की स्थापना करना था बाबा का मानना था कि जो व्यक्ति किसी अन्य प्राणी का दुख दर्द नही समझ सकता है वो निर्वाण का अधिकारी नही हो सकता है चूंकि बाबा साहब का मुख्य लक्ष्य समाज मे मौजूद असमानता को समाप्त करना था इसलिए उन्होंने अपने धर्म का समाज सुधार की परम्परा को जारी रखा बाबा साहब का मानना था कि समाज मे जो विकृति है उन्हें समाप्त कर मूल्यों की रक्षा करने मे बौद्ध धर्म ही सक्षम है क्योंकि बौद्ध धर्म मे ही समता समानता भ्रातत्त्व का विचार मौजूद था स्वयं बाबा साहब ने जब हिंदू धर्म का त्याग किया तो उनका उद्देश्य अपने समाज ,वंचित पीड़ितों को एक सम्मानजनक स्थान समाज मे दिलाना था वास्तव मे नवयान सामाजिक, धार्मिक सुधार से ही आरंभ नही हुआ था बल्कि इसका लक्ष्य राजनीतिक नैतिक आधार भी था, बाबा साहब का नवयान के संदर्भ मे कहना था कि ये नैतिकता के बजाय राजनीतिक क्षेत्र मे सामाजिक असमानता को चुनौती देगा, बाबा साहेब ने महात्मा बुद्ध को एक शिक्षक ही मानते थे जैसा कि मूल बौद्ध धर्म मे भी महात्मा बुद्ध ने स्वयं को शिक्षक ही माना था न कि ईश्वर इस तरह देखा जाय तो बाबा साहेब के नवयान धर्म का उद्देश्य केवल धार्मिक नही था बल्कि इसके द्वारा बाबा साहेब समाज मे समता स्थापित कर समता की भावना को बल देना था उनका मानना था कि नवयान व्यक्ति के पारलौकिक उत्थान् ही मे ही सहायक नही है।

बल्कि इससे व्यक्ति का मानसिक अभ्युदय भी होगा यही नही नवयान के बाईस प्रतिज्ञाओं मे उन्होंने दयालुता और करुणा पर विशेष ध्यान दिया ताकि प्रत्येक प्राणी परकल्याण मे स्वकल्याण की अनुभूति प्राप्त कर सके नवयान के सिद्धांतों मे चोरी न करना, झूठ न बोलना, बुरे कर्मो से दूर रहना, मानसिक और शरीरिक अवगुणों जैसे मादक पदार्थो के सेवन से दूर रहने पर ज्यादा बल दिया गया है क्योकि बाबा साहेब को ये मालूम था कि ये अवगुण ही मानवता की दुर्दशा के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार है इससे मनुष्य का मानसिक अधपतन होता है और आर्थिक नुकसान अलग से पहुँचता है जिससे उनकी समृद्धि का मार्ग अवरुद्ध होता है तथा सामाजिक स्तर गिरता है अतरू कहा जा सकता है कि बाबा साहेब ने नवयान धर्म द्वारा दलित समाज को समानता, बंधुत्व की भावना प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया बाबा साहेब ने अनेक अवसरों पर कहा कि मै स्पष्ट रूप से कहना चाहता हु, मनुष्य धर्म के लिए नही बल्कि धर्म मनुष्य के लिए है अगर मनुष्यता की प्राप्ति करनी है तो धर्म परिवर्तन करो अपने परिवार और कौम को सुखी देखना चाहते हो तो धर्म परिवर्तन करो बौद्ध धर्म के प्रति उनके मन मे अत्यंत सम्मान था बार बार उनके अपने कथनों में स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है यही कारण है जब बाबा साहेब की कोशिशों के बाद भी हिंदू धर्म अपने नियमों मे सुधार करने को तैयार न हुआ तब बाबा साहेब ने धर्मांतरण करने का निश्चय किया और घोषणा

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 01, January 2024

किया कि मै बौद्ध सिद्धांतों को मानता हु और उनका पालन करूँगा मै अपने लोगो को बौद्ध धर्म के दोनों धार्मिक पंथों हीनयान और महायान के विचारों से दूर रखूँगा वास्तव मे हमारा बौद्ध धर्म एक नया बौद्ध धर्म है इसे नवबौद्ध धर्म के नाम से जाना जाय वास्तव मे देखा जाय तो नवयान आधुनिक भारतीय बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय है जिसे बीसबी शताब्दी के लिए उपयुक्त बताया गया है बाबा साहेब अंबेडकर ने जिन सामाजिक समस्याओं भेदभाव से बचपन से परेशान हुए थे उनसे प्रेरित होकर उन्होंने अछूतों के कल्याण हेतु नवयान धर्म की स्थापना किया वास्तव मे अंबेडकर महोदय बौद्ध धर्म को एक आदर्श समुदाय के रूप मे स्थापित करना चाहते थे जो विचारधाराओं के स्तर पर समावेशी, लेकिन ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म और भारतीय राष्ट्रवाद के मातहत न हो।

ध्यान देने योग्य बात ये है कि बाबा साहेब हिंदू धर्म की कुरीतियों से इतना त्रस्त हो गए थे कि उन्हे हिंदू धर्म का त्याग करने के अलावा कोई विकल्प नही समझ आया क्योंकि एक लम्बे समय तक उन्होंने कोशिश किया और इंतजार किया कि हिंदू धर्म के अगुआ उनके समाज की पीड़ा समझ सके और हिंदू धर्म मे सुधारों का प्रयास करे लेकिन ऐसा कुछ हुआ नही तो उन्होंने हिंदू धर्म त्याग का जरूरी समझा जहाँ तक बौद्ध धर्म की बात है तो उसमे उन्होंने वो सभी सुधार किया जो अछूतों द्वारा बौद्ध धर्म को आत्मसात करने के लिए आवश्यक माना इस संदर्भ मे बेली महोदय का कथन स्मरणीय हैश बौद्ध धर्म सामाजिक समरसता, भक्ति के बजाय सम्मान पर आधारित था इसलिए बाबा साहेब का बौद्ध धर्म की ओर झुकाव हुआश अतरू बाबा साहेब ने जिस नव बौद्ध धर्म का चलाया जिसे नव दलित आंदोलन भी कहा जा सकता है यह दलितों के जीवन मे बदलाव चाहने वालो का एक बड़ा संघर्ष था जो सामाजिक पदानुक्रम मे सबसे नीचे माने जाते थे इस आंदोलन ने दलितों के जीवन मे बदलाव लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया जिन दलितों ने नव बौद्ध धर्म ग्रहण किया उन्हें इस नव बौद्ध धर्म ने सामाजिक आर्थिक धार्मिक और राजनीतिक रूप से ज्यादा बेहतर स्थिति प्रदान किया जबकि हिंदू दलितों की स्थिति कमोवेश वैसी ही थी जैसे पहले थी इनकी स्थिति मे धीरे धीरे सुधार दिखायी पड़ रहा है नव बौद्ध दलितों के समांतर आज भी हिंदू दलित वोट बैंक के रूप मे इस्तेमाल हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– द बुद्ध एंड हिज धम्म लेखक बाबा भीम राव अम्बेडकर, अनुवादक– डॉ भदंत आनंद कौशल्यायन
2– मोहन सिंह ड्रा भीम राव अम्बेडकर व्यक्तित्व के कुछ पहलू
3– बाबा भीम राव अम्बेडकर, शुद्र कौन है,
4– डॉ अंबेडकर राइटिंग एंड स्पीचेज वाल्यूम 3
5– भगवान दास, भारत मे बौद्ध का पुनर्जागरणं एवं समस्याएं, दलित लिवरेशन टुडे, मई 1996 लखनऊ
6– डॉ वी0 आर0 अंबेडकर, सोशल जस्टिस एंड पॉलिटिकल सेफगार्ड ऑफ डिप्रेस्ड क्लासेस
7– जाति विनाश, बाबा भीम राव अम्बेडकर, अनुदित राजकिशोर
8– भगवान बुद्ध और उनका धम्म, डॉ भीम राव अम्बेडकर
9– डॉ0 अंबेडकर का मत परिवर्तन और बौद्ध धर्म विजय कुमार (निदेशक) विश्व सम्वाद केंद्र, देहरादून
10– अंबेडकर बुद्धिजम क्रिस्टोफर एस क्वीन